डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 24-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा

संक्षेप में, संपूर्ण वैदिक साहित्य का परिचय प्रस्तुत रूपरेखा में दिया जा सकता है ।

क. चार संहिताएं (चार वेद)

संहिताएं रचनात्मक साहित्य के अंतर्गत आती है । इनमें काव्यतत्व की प्रधानता है । इनकी संख्या चार है-

1. ऋग्वेद- संहिताओं में यह सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। इसके अधिकांश सुक्त स्तुति परक है।
2. यजुर्वेद- इसमें यज्ञ संबंधी प्रार्थनाएं संकलित है । ऋग्वेद से लिए गए मंत्रों के साथ ही इसमें मौलिक गद्य का भी पर्याप्त अंश है । यह दो रूपों में उपलब्ध होता है- a. कृष्ण यजुर्वेद और b. शुक्ल यजुर्वेद
3. सामवेद- 75 मंत्रों को छोड़कर इसके सभी मंत्र ऋग्वेद से संकलित हैं । सामवेद के सभी मंत्र गेय है, अर्थात गीतात्मक है।
4. अथर्ववेद- इसका आकार ऋग्वेद के दसवें मंडल जितना है और इसके अधिकांश मंत्र भी ऋग्वेद के दसवें मंडल से ही लिए गए हैं। किंतु विचारधारा की तुलना करने पर यह ऋग्वेद से भी प्राचीन प्रतीत होता है । इसमें मन्त्र, तन्त्र, जादू-टोने आदि से संबंधित सामग्री मिलती है इससे प्रतीत होता है कि इसका संबंध ऋग्वेद कालीन निम्न श्रेणी के लोगों से भी था

ख. ब्राह्मण ग्रंथ- ब्रह्म से संबंधित होने के कारण ये ग्रंथ ब्राह्मण कहलाते हैं । यज्ञों के अनुष्ठान में वैदिक मंत्रों के विनियोग पर अधिक केंद्रित है । यज्ञानुष्ठान से संबंधित यह सबसे प्राचीन ग्रंथ है । भारतीय धर्म के इतिहास की दृष्टि से भी इनका विशेष महत्व है । यह सभी ब्राह्मण ग्रंथ गद्यात्मक है । इनमें गद्य का प्राचीनतम रूप देखने को मिलता है । वेदों की व्याख्या में ही इनका महत्व है । वैदिक भाषा और वैदिक शब्दों की निरूक्ति पर भी ये प्रकाश डालते हैं । वैसे तो सभी संहिताओं के अपने-अपने ब्राह्मण ग्रन्थ हैं और इस प्रकार इनकी संख्या बहुत होनी चाहिए; किंतु यह 'एतरेय', 'शतपथ' आदि ब्राह्मण-ग्रन्थ ही विशेष ज्ञातव्य है ।

ग. आरण्यक ग्रंथ - ब्राह्मण ग्रंथों के अंतिम अंश 'आरण्यक' हैं । इनकी रचना और अध्ययन वन में (अरण्ये) होने के कारण ही इनका नाम 'आरण्यक' पड़ा है । आरण्यक-ग्रंथों में वानप्रस्थियों के लिए उपयुक्त विचार मिलते हैं । इनमें कर्मयोग और ज्ञानयोग दोनों का संबंध हुआ है । आगे चलकर विकसित होने वाले उपनिषद-ग्रंथों के बीज आरण्यक-ग्रंथों में मिलते हैं । 'ऐतरेयारण्यक', 'तैत्तिरीयारण्यक' आदि इनमें विशेष है ।

घ. उपनिषद् ग्रंथ - वैदिक साहित्य के विकास क्रम में चौथे स्थान पर उपनिषद् ग्रंथ आते हैं । जैसे ब्राह्मण-ग्रंथों में कर्मकांड को प्रधानता मिली है, उसी प्रकार उपनिषद- ग्रंथों में ज्ञानकाण्ड की प्रधानता मिली है।

'उपनिषद' शब्द का अर्थ है- 'रहस्य ज्ञान के लिए निकट बैठना' । उपनिषदों का रहस्यमय ज्ञान उन्हीं शिष्यों को प्राप्त होता था, जो गुरुओं के निकट रहते थे । उपनिषदों में वेदों के, धर्म और दर्शन-सम्बन्धी सर्वोत्कृष्ट तत्व प्रस्तुत हुए हैं । वैसे तो इनकी 108 कही गई है किंतु प्रमुख उपनिषद 14 हैं-

1. ऐतरय
2. कौषीतकी
3. वृहदारण्यक
4. तैतिरीय
5. महानारायण
6. कठ
7. श्वेताश्वतर
8. मैत्रायणी
9. ईश
10. छान्दोग्य
11. केन
12. मुण्डक
13. माण्डूक्य
14. प्रश्न

(ड़) छह वेदांग

वेद के अध्ययन में सहायक ग्रंथों को वेदांग कहा जाता है । यह छः है-

1. शिक्षा
2. कल्प
3. व्याकरण
4. निरुक्त
5. छंद और
6. ज्योतिष

इन वेदांगों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. शिक्षा- इस वेदांग में वेद के शुद्ध पाठ के नियम सम्मिलित हैं। ' शिक्षा' वेदांग को हम ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण की शिक्षा का प्राचीनतम शास्त्र कहते हैं । 'ऋक्प्रातिशाख्य' आदि अनेक प्रातिशाख्य- ग्रंथ और 'पाणिनीय शिक्षा' आदि अनेक शिक्षा-ग्रंथ, शिक्षा वेदांग में परिगणित होते हैं।
2. कल्प - 'कल्प' वेदांग का सम्बन्ध वैदिक यज्ञों के विधि-विधान से है। 'कौन सा यज्ञ कैसे किया जाए' - इसी का नाम कल्प है। कल्प नामक वेदांग में चार प्रकार के ग्रंथ है, जो सूत्र शैली में रचित होने के कारण 'कल्पसूत्र' नाम से प्रसिद्ध है । यह कल्पसूत्र चार प्रकार के हैं, १. श्रौतसूत्र- जिनमें 'श्रुति' अर्थात वेद में कहे गए बड़े-बड़े यज्ञों की विधियां मिलती है । २. गृह्य सूत्र -इन में गृह्य अर्थात घरों में होने वाले यज्ञ की विधियां मिलती है । ३. धर्मसूत्र- इनमें व्यक्ति और समाज के आचार व्यवहार के नियम मिलते हैं और ४. शूल्वसूत्र इन में यज्ञ की वेदी बनाने की विधि और नाप (परिमण) दी गयी है।
3. व्याकरण- इस वेदांग में वेदों में आए शब्दों और पदों की व्युत्पत्ति दी गई है और उनके शुद्ध रूप को स्पष्ट किया गया है । इस वैदांग का प्रमुख ग्रंथ पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' है।
4. निरुक्त- इस वैदांग में वेद के पदों का निर्वचन किया गया है, जो वेद का अर्थज्ञान कराने में सहायक है । 'यास्क' का 'निरुक्त' इस वेदांग का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रंथ है ।
5. छन्दस्- इस वेदांग में वैदिक ऋचाओं में प्रयुक्त छन्दों का विवेचन किया गया है ।
6. ज्योतिष- इस वेदांग में यज्ञादि वेदविहित कार्यों को करने के लिए उचित समय का विचार किया गया है।